

**प्रेस विज्ञप्ति**

आईआईएमए के मिश्रा वित्तीय बाज़ार एवं अर्थव्यवस्था केंद्र ने चलाया "भारतीय बैंकों की लाभ क्षमता और कॉर्पोरेट प्रशासन" विषय पर एक अध्ययन[[1]](#footnote-1)

**28 अक्टूबर, 2020 | अहमदाबाद :**

**सारांश :**

परंपरागत रूप से बैंकों के वास्तविक क्षेत्र पर अपने प्रणालीगत प्रभाव को देखते हुए बैंक अत्यधिक विनियमित निकाय हैं। इसलिए, उनके प्रदर्शन को समझना गंभीर रूप से महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, यह आधारपत्र भारतीय बैंकों की लाभ क्षमता पर बोर्ड संरचना के प्रभाव की जांच करता है। एक दिशात्मक दूरी संचालन पद्धति का उपयोग करके लाभ क्षमता का आकलन करने के बाद, जो अवांछनीय परिणाम के लिए उत्तरदायी है, उसमें इस अध्ययन ने स्वामित्व पैटर्न पर अक्षमता के स्रोत को सुलझाने के लिए तकनीकी और आवंटन अक्षमता में लाभ की अक्षमता की छानबिन की है। औसतन, यह देखा गया कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (राज्य के स्वामित्व वाले) का प्रदर्शन मुख्य रूप से आवंटन अक्षमता से उत्पन्न लाभ अक्षमता के अपने उच्च स्तर के कारण अपेक्षाकृत खराब रहा है। इस क्षमता अंतर की व्याख्या करते हुए, यह देखा गया है कि बोर्ड की रचना और संरचना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बड़े बोर्डों वाले भारतीय बैंक और जो सदस्यों को उच्चतर सत्र शुल्क का भुगतान करते हैं वे बेहतर प्रदर्शन करते हैं। निजी क्षेत्र के बैंकों में, प्रमुख कॉर्पोरेट प्रशासन चर जो प्रदर्शन में सुधार करते हैं, उनमें उच्चतर संख्या में महिला बोर्ड सदस्य शामिल हैं और अपेक्षाकृत स्वतंत्र बोर्ड सदस्यों का बड़ा अनुपात शामिल हैं। यह अध्ययन बैंक प्रदर्शन में बोर्ड संरचना की भूमिका के बारे में चर्चा में योगदान देता है।

मिश्रा वित्तीय बाज़ार एवं अर्थव्यवस्था केंद्र (एमसीएफ़एमई) के वेबपेज पर अन्य आधार पत्रों के साथ पूरी रिपोर्ट इस लिंक पर उपलब्ध है : <https://www.iima.ac.in/web/areas-and-centres/research-centres/misra-centre-for-financial-markets-and-economy/research-and-publications>

**इस अध्ययन से प्रमुख अंतर्दृष्टि / निष्कर्ष :**

1991-92 के दौरान भारतीय वित्तीय क्षेत्र के अविनियमन के आरंभ के बाद भी, बैंकिंग क्षेत्र पर राज्यों का प्रभुत्व जारी है। पीएसबी की नियामक संरचना का दोहरा नियंत्रण उनके कॉर्पोरेट प्रशासन ढांचे को कारगर बनाने के लिए सबसे बड़ी अड़चनों में से एक रहा है। पीएसबी का प्रदर्शन भारतीय नीति निर्माताओं के लिए चिंता का कारण रहा है। बैंक-आधारित वित्तपोषण संरचना के साथ उभरते बाजार वाले देश के लिए, बैंकों की उच्च अक्षमता संभावित विकास की संभावना को बाधित करती है। अक्षमता का एक बड़ा हिस्सा स्वभावगत आबंटन है, जो उत्पादक व्यवसाय के अवसरों में संसाधनों के गलत उपयोग के प्रभाव को प्रभावित करता है। इसके परिणामस्वरूप पीएसबी के गैर-निष्पादित ऋण अधिक हो गए हैं। इस संदर्भ में, कॉर्पोरेट प्रशासन की भूमिका महत्वपूर्ण है।

अनुभवजन्य परिणाम बताते हैं कि बोर्ड का आकार मायने रखता है, जो एजेंसी का दूसरा समर्थन प्रदान करता है और कॉर्पोरेट वित्त के संसाधन निर्भरता सिद्धांत का समर्थन करता है। इसी कारण, बेहतर निगरानी और नियंत्रण द्वारा बैंक के प्रदर्शन के लिए अधिक बोर्ड सदस्य दबाव डालते हैं। साथ ही, वे विभिन्न प्रकार की विशेषज्ञता लाते हैं जो प्रदर्शन बढ़ाने वाली होती हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि बेहतर प्रदर्शन उच्च मुआवजे के साथ जुड़ा हुआ है। उच्च-शक्ति वाले प्रोत्साहन बोर्ड के सदस्यों को निगरानी और सलाहकार भूमिकाओं में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। बैंक के प्रदर्शन पर स्वतंत्र बोर्ड के सदस्यों के प्रभाव पर निष्कर्ष यह बताते हैं कि निजी बैंक ऐसे सदस्यों के उच्च अनुपात से लाभान्वित होते हैं। अंत में, अध्ययन का निष्कर्ष है कि विविधता और बैंक के प्रदर्शन के बीच कमजोर संबंध है। निजी क्षेत्र के बैंक उच्च नेटवर्क क्षमता वाले महिला बोर्ड के सदस्यों और बोर्ड के सदस्यों की उपस्थिति से लाभान्वित होते हैं।

किसी भी देश के लिए वास्तविक क्षेत्र में ऋण के कुशल आवंटन की सुविधा के लिए एक स्वस्थ बैंकिंग प्रणाली आवश्यक है। सरकारी स्वामित्व वाले बैंकों के उच्च अनुपात वाले देश में, नीति निर्माताओं के लिए बैंक बोर्डों के कुशल कामकाज के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना अनिवार्य है। बोर्डों को सशक्त बनाने से एक मजबूत शासन संरचना बन सकती है जो बेहतर जोखिम प्रबंधन और संसाधनों के कुशल आवंटन की सुविधा प्रदान करेगी।

मीडिया प्रश्नों के लिए, कृपया संपर्क करें :

मिताली नायडू

कार्यकारी, जनसंपर्क

फोन : (सेल) +91-7069074816, (कार्यालय) +91-79-7152 4684, ईमेल : pr@iima.ac.in

1. *यह रिपोर्ट आईआईएमए के प्रोफ़ेसर अभिमान दास तथा आईआईएमके के प्रोफ़ेसर बालागोपाल गोपालकृष्णन द्वारा तैयरा की गई थी।*  [↑](#footnote-ref-1)